श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

तृतीय वर्ष - अभ्यास - ४

सितंबर 2022

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे। ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे। ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है। ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा। ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - **२०**

१. पुज्य उमास्वातिजी म.सा. के विद्यागुरु पूज्पपाद...................... नाम के वाचनाचार्य थे।
२. संज्वलनादि कषाय, नोकषाय के मंदता से साधु.................गुणस्थान में आकर बसता है।
३. .... निश्चय और व्यवहार युक्त है।
४. जिनबिंब की प्रतिष्ठा, रथयात्रा तथा स्नात्र के अंत में.................. बोली जाती है।
५. केवली समुद्घात के दूसरे समय में आत्मप्रदेशों को उत्तर दक्षिण बढाकर.............. जैसा आकार बनाते हैं।
६. .... के मार्ग को स्वीकार कर अनेक आत्माओं ने शिवगति को प्राप्त किया है।
७. आचार्य हरिभद्रसूरि ने .... पर लघुवृति की रचना की है।
८. .... समुद्घात में ज्यादा नये कर्म बंध जाते हैं।
९. बहुत सारे लोगों को सुनाने हेतु ऊंची आवाज से आलोचना ले वो.................. है।
१०. .... धर्मध्यान में आंशिक रुप से शुक्लध्यान है।
११. दिगंबर परम्परा श्री उमास्वातिजी को.................. समान मानती है।
१२. पू. हरिभद्रसूरिजी की धर्मजननी माता .... थे।
१३. जिसने व्यवहार छोडा उसने .... किया।
१४. बृहदशांति की रचना..................... के द्वारा की गई है।
१५. मन में पाप रखे बिना................ हेतु आलोचना करना अति आवश्यक है।
१६. .... तीर्थ के सेवन से क्रोधरुप गरमी शांत होती है।
१७. तत्वार्थ सूत्र के सातवें अध्याय में.................. की अपूर्व समझ दी गई है।
१८. लोभ का सूक्ष्म अंश होने से .... कहलाता है।
१९. .... छोडने से निरालंबन ध्यानामृत की प्राप्ति होती नहीं।
२०. आलोचना लेने वाले को सम्यक्प्रकार से पापशुद्धि कराने वाले वो .... कहलाते हैं।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - **१५**

१. सात समुद्घात की क्रिया कौन कर सकते हैं ?
२. धर्मध्यान की मुख्यता कौनसे गुणस्थान में होती है ?
३. आगमादि पांच प्रकार के व्यवहार को जानने वाले क्या कहलाते हैं ?
४. श्री हरिभद्रसूरि को क्रोध से जगाने वाले कौन थे ?
५. आहारक शरीर बनाते वक्त चौदह पूर्वधर महात्मा को कौनसा समुदघात होता है ?
६. छेद ग्रंथो के रहस्यों से अनजान ऐसे गुरु के पास आलोचना ले तो कौन सा दोष लगता है ?
७. निरालंबन ध्यानामृत की प्राप्ति कहाँ होती है ?
८. संसार से हारे हुए एवं थके हुओ का विश्राम स्थल कौन है ?
९. श्रुतसागरी किसकी टिका है ?
१०. दोष दूर होने से क्या उत्पन्न होता है ?
११. मेरे जैसा समस्त जंबुद्वीप में कोई नहीं यह बताने के लिये राजपुरोहित हाथ में क्या रखते है ?
१२. मंत्रजाप के निवेशन में किनके नाम का आदरपूर्वक उच्चारण किया जाता है ?
१३. क्या रोग विनाशक माना जाता है ?
१४. अप्रमत्त साधु महात्मा ध्यान की शुद्धि के लिये किसे धारण करते हैं ?
१५. योग क्षेत्र में श्री हरिभद्र सूरि की रचनाये किसके योगसूत्र रचना की याद दिलाते है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - **१०**

१) अहन् २) भास्कर ३) वेउव्विय ४) गत्वा ५. वः ६) मन्दोदय ७) वेत्ति ८) सत्त ९) अवत्त १०) अमाई ११) वेय १२) समेत्य
१३) सन्नि १४) निस्सल १५) विज्ञाय १६) सध्दयान १७) कर्णं दत्वा १८) अवायदंसी १९) महिताः २०) विधाय

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) आत्मशुद्धि	१) आरंभक	६) संपराय	६) आलोचना
२) देवसूरि	२) आवश्यक	७) धर्मध्यान भावना	७) दंड
३) दुवालश	३) माध्यस्थ	८) निरस भोजन	८) शांति-स्तव
४) सातवे समय में	४) ८० चोबीसी	९) लक्ष्मणासाध्वी	९) कषाय
५) निष्कंप समाधि	५) बृहद् शांति	१०) स्नात्र पूजा	१०) पाँच उपवास

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. अलोचनाचार्य के गुण कितने ?
२. अप्रमत्त गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का उदय होता है ?
३. तत्वार्थ सूत्र में कुल कितने सूत्र हैं ?
४. तीन समुद्घात कितने दंडक में होते हैं ?
५. अप्रमत्त संयत गुणस्थान में कितनी प्रकृति का बंध होता है ?
६. सरस्वती कितने स्वरुप वाली है ?
७. योगबिन्दु ग्रंथ में लगभग कितनी गाथाये हैं ?
८. अघाति कर्म कितने है ?
९. केवली समुद्घात का समय कितना ?
१०. पू. हरिभद्र सूरि ने कितने ग्रंथो की रचना की ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✔) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. ॐकार पंच-परमेष्ठि का वाचक है ।
२. विश्व का एक भी विषय ऐसा नहीं जिसकी तत्वार्थ सूत्र में स्पर्शना न हुई हो ।
३. बडे दोषो को आलोचित करे पर छोटे दोषों की अवगणना करे वह "सूक्ष्म दोष" है ।
४. वेदना समुद्घात में नये कर्म बंधते नहीं ।
५. शीतलेश्या प्रवर्तित करते वक्त देवों को तेजस समुद्घात रहता है ।
६. परमहंस सहस्त्रयोधी था ।
७. पू. उमास्वातिजी की जन्मभूमि राजगृही थी ।
८. गर्भज-तिर्यंच को चार समुद्घात होते है ।
९. लक्ष्मणा साध्वीजी ने बीस वर्ष तक आयंबिल तप किया था ।
१०. चौवीस शान्त जिनेश्वरो हम पर प्रसन्न हो...... प्रसन्न हो ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. चौथे समय में चारों ओर का अवकाश पूरा कर संपूर्ण १४ राजलोक में आत्मप्रदेशों को विस्तारित करता है ।
२. मन साधा उसने सब साधा ।
३. मन से तो लगभग अविरत पापी विचारों की न रुकने वाली श्रृंखला चालू ही रहती है ।
४. शोक क्रोध में परिणित हुआ और अंतर में बदला लेने की आग उगलती भावना प्रबल बनी ।
५. महाजनो येन गतः स पन्था ।
६. ऐसे समय में आवश्यकादि के अभाव में भी सद्ध्यान से शुद्धि होती है ।
७. गुरुभगवंत जो प्रायश्चित दे वो स्वीकार कर श्रद्धापूर्वक पूर्ण करने का है ।
८. जिनशासन के त्रिकाल सत्य सिद्धान्तों का ये खजाना है ।
९. श्री पद्मनाथ नामक तीर्थंकर के तीर्थ में सिद्धि पद को पायेंगे ।
१०. आहारक वर्गणा के पुद्गलों को ग्रहण कर आहारक शरीर बनाते हैं।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. समुद्घात याने क्या बताकर केवली समुद्घात समझाओ ।
२. सद्ध्यान समझाओ ३. पू. हरिभद्रसूरि के योग ग्रंथो का परिचय कराओ ।
४. आलोचना के लाभ संक्षिप्त में समझाओ ।
५. 'बृहद्-शांति' सूत्र परिचय के आधार पर अरिहंत का महत्व समझाओ ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४, सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com